ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

भारतीय संस्कृति का प्रसार

KEY WORDS: रीति–रिवाज, खान–पान, रहन–सहन, तीज–त्यौहार, संस्कृति

अन्जु रानी

ABSTRACT

किसी भी देश की संस्कृति वहां की भाशा धर्म, समाज, जाति परिवार, परम्परा एवं रीति–रिवाज, त्यौहार, भोजन, वस्त्र–धारण, साहित्य में इतिहास, काव्य व महाकव्य, तथा वहां के नृत्य, नाटक व रंगमंच चित्रकारी व वास्तुकला आदि के संगम से बनती है।

भारतीय संस्कृति विश्व के इतिहास में कई दृश्टियों से विषेश महत्व रखती है। भारतीय संस्कृति का वै वीकरण संसार के विभिन्न देशों में हो रहा है। अर्थात् यह कहना अनुचित नहीं होगा कि भारतीय संस्कृति का प्रसार अब केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व के विभिन्न देशों में होने लगा है। यहां के रीति रिवाज, खान–पान, रहन–सहन, तीज–त्यौहारों, तथा भारतीय संस्कृति के साहित्यिक पक्षों का अनुकरण विश्व के विभिन्न देश, फिजी, आस्ट्रियाँ, अमेरिका, कनाडा, रूस व जापान आदि देश करने लगे हैं।

भारत की संस्कृति कई चीजों का संगम है जिसमें भारत का लम्बा इतिहास और सिन्धु घाटी की सभ्यता के दौरान बनी और आगे चलकर वैदिक युग में विकसित हुई, बौद्ध धर्म एवं स्वर्ण युग की शुरूआत और उसके अस्तगमन के साथ फली–फूली अपनी खुद की प्राचीन विरासत शामिल है।

इसके साथ ही पड़ोसी देशों के रिवाज, परम्पराओं और विचारों का भी इसमें समावेश है। पिछली पाँच सहस्राब्दियों से अधिक समय से भारत के रीति–रिवाज, भाषाएँ, प्रथाएँ और परंपराएँ इसके एक–दूसरे से परस्पर संबंधो में महान विविधताओं का एक अद्वितीय उदाहरण देती है।

भारतीय संस्कृति सर्वांगीणता, विशालता, उदारता और सहिश्णुता की दृश्टि से अन्य संस्कृतियों की अपेक्षा अग्रणी स्थान रखती है।

भाषा– भारतीय संविधान ने संघ सरकार के संचार के लिए हिंदी और अंग्रेजी इन दो भाषाओं के इस्तेमाल को आधिकारिक भाषा घोशित किया है व्यक्तिगत राज्यों के उनके अपने आंतरिक संचार के लिए उनकी अपनी राज्य भाषा का इस्तेमाल किया जाता है भारत में दो प्रमुख भाशा संबंधी परिवार है भारतीय आर्य भाषाएं और द्रविड़ भाषाएँ।

भारतीय साहित्य –

ब्रिटिश राज के दौरान, रवीन्द्रनाथ टैगोर के कार्यों द्वारा आधुनिक साहित्य का प्रतिनिधित्व किया गया है, रामधारीसिंह दिनकर, सुब्रमनिया भारती, राहुल सांकृत्यायन, कुवेम्पु, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, माइकल मधुसूदन दत्त, मुंशी प्रेमचन्द, मुहम्मद इकबाल, देवकी, नंदन खत्री, प्रसिद्ध हो गए हैं समकालीन भारत में, जिन लेखकों को आलोचकों के बीच प्रशंसा मिली वो है गिरीश कर्नाड, अज्ञेय, निर्मल वर्मा, कमले श्वर, वैकोम मुहम्मद बशीर, इंदिरा गोस्वामी, महाश्वेता देवी, अमृता प्रतीम, मास्ति वेंकटेश आयेगर, कुरतुलियन हैदर और थाकाजी सिवांसकरा पिल्लई।

भारतीय संस्कृति के वैश्वीकरण के उद्देश्य –

- क्षेत्रीय, राश्ट्रीय तथा अंतराश्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी का सम्यक विकास।
- हिंदी को वैश्विक भाशा के रूप में मान्यता दिलाने का सुसंगत प्रयास।
- महात्मा गांधी के मानवतावादी मूल्यों, यथा–शांति, अहिंसा, सत्य, धर्मनिरपेक्षता, आदि का उन्नयन, स्थापन एवम् प्रसार।
- हिंदी को जनसंचार, व्यापार, प्रबंधन, विज्ञान एवम् तकनीकी शिक्षा, तथा प्रशसनिक कामकाज की भाषा के रूप में दक्ष बनाना ताकि इसे रोजगार से जोड़ा जा सके।

वैश्विक प्रसार का माध्यम

भारतीय संस्कृति का प्रसार विदेशों में हो इसके लिए रेडियों, टी.वी., इन्टरनेट व मोबाईल तथा भारतीय संस्कृति पर अधारित नाटक, फिल्म, काव्यगोश्ठियाँ तथा महाकाव्य आदि अहम भूमिका निभाते हैं। भारतीय संस्कृति का द्योतक नृत्य, गायन व मंचन माना गया है।

निश्र्कश :–

किसी भी संस्कृति का प्रसार करने के लिए एक माध्यम जरूरी है। भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रसार रेडियों, टी.वी. व फिल्मों के माध्यम से किया जा रहा है। राष्ट्रीय एवं आन्तराष्ट्रीय भाषाओं के मध्य व्यापक एवं बहुल संपर्क व समन्वय पर जोर दिया जा रहा है। भारतीय एवं वैश्विक भाषाओं के अन्त सम्पर्क व समन्वय की संस्कृति का पल्लवन एवं विकास हो रहा है। हिन्दी को भारतीय संस्कृति मूल्यों एवं संदेशों संवाहक भाषा के रूप प्रतिष्ठा मिल रही है। ज्ञान, शांति एंव मैत्री की परिकल्पना को मूर्त रूप देने का गंभीर प्रयास किया जा रहा है। जिसके फलस्वरूप भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रसार नित्य नये आयाम प्रस्तुत कर रहा है।

सन्दर्भ ग्रंथ –

1 वीरेन्द्र सिंह यादव का आलेख (कला और संस्कृति)
2 कन्नड साहित्य, ब्रिटैनिका विश्वकोश,
3 भारतीय संस्कृति के स्वर– महादेवी वर्मा,
4 हिन्दू धर्म, ब्राह्मण विश्व कोश ब्रिटानिका 2008
5 बीबीसी धर्म और नैतिकता
6 विश्व हिन्दी पत्रिका– कामता प्रसाद
7 प्राचीन अध्याय के राजनैतिक एवं सांस्कृति अध्ययन, संस्कृति के चार अध्याय– रामधारी सिंह दिनकर